अथ।

श्री सीताराम नाम रूप अनन्यता वर्णन

ॐ छन्द-मन्जु ॐ

पर ब्रह्म सियराम लखन का भेद सु भाव अपारा है॥ बरणत बेद पुराण शंभु कबि शेषहु का मन हारा है॥समुझहिं कोउ शुचि संत शनेही जिन्हिकर बिमल विचारा है॥ प्रेमलता जड़ जीव न जानें फँसे मूढ़ ग्रह कारा है॥ १ ॥ ब्रह्मादिक सुर शिद्ध नाग मुनि योगी ध्यान लगाते हैं॥ नारदादि सनकादिक जिन्हि के निशि दिन गुण गण गाते हैं ॥ पाराशर शुकदेव भुशुन्डी जीवनमुक्त कहाते हैं॥प्रेमलता सब थके बिचारत महिमा पार न पाते हैं॥ २॥ क्या जानैं नर नारि बिवश जे भोगों के आधीना हैं॥ परबश परे बिचारे निशि दिन करते कर्म मलीना हैं॥ धावत सदा विषय इंद्रिनि के ज्ञान विचार विहीना हैं॥ प्रेमलता सठ स्वारथ में रत परमारथ पथ दीना हैं ॥ ३॥ बातें करैं बनाय ब्रह्मकी विषय कीच लपटाना हैं॥ कर्म

कुऐं में पड़ा बखानें ज्ञान विराग सुनाना हैं ॥ गृहाशक्त मति मलिन दीन अति माया मद अरुझाना हैं॥ प्रेम-- लता प्रभु भक्तिहींन नर पशु बिनु पूंछ विषाना हैं ॥४॥ पढ्यो कीरज्यों भगवत गीता रीताप्रेम प्रतीताहै॥ज्ञान-हिंसुन्दर नीति निदेशतआपु सहत भवभीता है॥नटमर-कट इव नचै मोह वश कहैं जक्त हम जीताहै॥प्रेमलता निज रूपभुलाना अधिक विषय पर प्रीताहै॥५॥भजन भावको मर्मन जाने पंडित बना निखट्टू है॥शिश्नोदर हित व्याकुल निस दिन धावत दरदर चट्टू है॥ प्रेरित लोभ शमीर न पावत चैनमैन का टट्ट है॥ प्रेमलतामन थिर न होय कहुँ ज्यों नटवा कर लट्टू है॥६॥पढ़ि पुराण इतिहास संहिता बाद प्रबाद बढ़ाते हैं॥कूटहिं भुसहिं अग्यताबस शठ सपनेउ सारनपाते हैं ॥ करनी कुटिल कठोर करैं पै पंडित पंच कहातेहैं॥प्रेमलता सियराम रटे बिनु यमपुर धक्का खाते हैं ॥७॥ कहँ यह वेद पु-राण बारता कहँ वह रसिकन बानी हैं॥ राति दिवस को भेद विचारहु पुनि ज्यों अमृत पानी हैं ॥ कहँ वह प्रेम कथा जग तारण कहँ यह लोक कहानी

हैं ॥ प्रेमलता कहँ सन्त बिबेकी कहँ पंडित बक ध्यानी हैं ॥ ८ ॥ कहँ सीताबर ईश शिरोमणि कहाँ जीव अति नीचा है ॥ खल खद्योत दिवाकर ज्यों पुनि रंक राउ कर बीचा है ॥ कहाँ संत सुख-धाम काम प्रद हरत घोर भव कीचा है ॥ प्रेमलता कहँ पंडित ज्ञानी ग्रस्यो मोह मद मीचा है ॥ सबके पर्मउ-पास्य देवता सियबर जगत प्रकाशक हैं ॥ सतचित आनँद रूप अनूपम शरण पाल खलत्राशक हैं ॥ ब्या-पक ब्रह्म अखन्ड अनामय भवभय भर्म बिनाशक हैं ॥ प्रेमलता अवतार जिते जग सीताराम उपासक हैं १० सुन्दर शील सुजान सुलायक अति कृतज्ञ सुखराशी हैं ॥ गुणातीत गुण खनि दिव्यतर श्री साकेत बिलासी हैं ॥ जिन्हि कर नामलेत जगमाहीं अधमौं होतसु पासी हैं ॥ प्रेमलता प्रभु भजबे लायक जड़ चेतन घट बासी हैं ११ श्यामलगोर किशोर मनोहर काम कोटि रतिवारे हैं ॥ सिय उर राम राम उर सीता होत न कबहूँन्यारे हैं ॥ बरणत जिन्हिके चरित निरंतर बेद पुराणउ हारे हैं ॥ प्रेमलता प्रभु संतन के हित पावन यश बिस्तारे

हैं ॥१२॥ उद्भव पालन प्रलय जक्त का जिन्हके अंशज करते हैं॥निशिदिन रहत सभीत जासु डर भुवन चतुर्दश डरते हैं॥ करहिं योग जोगी जेहि कारण मुनि गण ध्यान सुधरते हैं॥ प्रेमलता प्रभु छोड़ सीता बर संतन संग बिहरते हैं १३ दीनबन्धु करुणामय रघुपति हेतु रहित हितकारी हैं॥ तिनहूँ ते अति अधिक दयाकर श्री मिथिलेश दुलारी हैं॥ यह मत गूढ़ रशिक जन जानहिं कोउ कोउ विमल बिचारी हैं॥ प्रेमलता गुरु देव कृपा बिनु पावहिं कहाँ अनारी हैं॥१४॥ सियबिनु द्रवहिं न राम करै कोउ कोटिन योग विरागा है। तीरथ जपतप नेम कठिन ब्रत ध्यान समाधि सुयागा है॥ नामउँ रटत न होइ विमल उर सिय बिनु पचंतअभागा है॥ प्रेमलता भजु जनक ललो पद पंकज पदुम परागा है॥१५॥ रघुनन्दन प्रिय प्राण जानकी जान सु आदि भवानी हैं॥ उपजहिं जासु अंशते अगणित उमारमा ब्रह्माणी हैं॥ चाहत कृपाकटाक्ष बिलोकनि ब्रह्मादिक सुरज्ञानी हैं॥ प्रेमलता की ईष्ट देवता सिय स्वामिनि सुद दानी हैं॥१६॥ आड़ बन्द कोपीन कमण्डल सिर

पर जटा रखाये हैं॥तन में लाय अखण्ड विभूती द्वा-
दश तिलक रमाये हैं॥ वैष्णव बेष बनाय ठगैं जग ईष्ट
भेद नहिं पाये हैं॥ प्रेमलता उन्मत्त सरिस सठ फिरहिं
उदर हित धाये हैं॥१७॥बिना बोध बैराग अशोभित
श्रम दायक दुख रूपा है॥भर्मत वृथा लोभ लालचवश
सहत कठिन हिम धूपा है॥भटकि मरे चहुँ धाम मिल्यो
नहिं गुरु विनुभेद अनूपा है॥प्रेमलता सबजन्म गमा-
यो खाय विषय के पूपा है॥१८॥परमातम निज निकट
लखैं नहिं धावत फिरैं दिवाना हैं॥ज्ञान विचार बिहीन
न जानत प्रभु सर्बज्ञ समानाहैं॥श्रीसत गुरु उपदेश संग
बिनु जीव सहहिं दुख नाना हैं॥ प्रेमलता परि भर्म
जाल में आतम रूप भुलाना हैं१९ श्रीसियरामउपासक
साँचे लाखन्हि में कोउ पाये हैं॥जिन्हि के ढंग निराले
जग ते वेद पुराणनि गाये हैं॥ कादर कठिन कर्म के
प्रेरित बेष बनाइ भुलाये हैं॥ प्रेमलता मनमुख स्वारथ
रत फिरहिं सदा मुँह बाये हैं॥२०॥ सीताराम अनन्य
भाव बिनु परमानन्द न पाते हैं॥ सकल धर्मशिरताज
धर्म तेहि कादर लखि घबराते हैं॥ श्रीगुरु देव कृपाल

कृपा करि देश अनन्य लखाते हैं ॥ प्रेमलता सियराम उपाशक जीते जी मरजाते हैं ।२१। मन बच क्रम थि-के सतगुरु कर पद पंकज लपटाये हैं ॥ लोभ मोह मद मान कपट छल उरते धोइ बहाये हैं ॥ निशिदिनरहैं उदास जक्त से विषय भोग विसराये हैं ॥ प्रेमलता सो-इ संत बिबेकी भाव अनन्य सुपाये हैं ॥२२॥ जानउ क-ठिन अनन्य भावना होस गुम्म करि देतीहै॥ कर्मयोग उन्माद बिविध मत चटक चातुरी जेतीहै ॥ बोलनि मिलनि हँसनि संशय भ्रम मन सुखता हरलेती है॥ प्रे-मलता रँगि दम्पति रँग महँ करइ सुबुद्धि सचेती है २३ सियाराम रँगरँगे जीव जे ते त्रिभुन से न्यारे हैं॥छकें रहैं दिनरैन एकरस ज्यों मतंग मतवारेहैं ॥ रटैंनामसुख धाम निरंतर प्रेम प्रमोद अपारे हैं ॥ प्रेमलता मन मुदित अटहिं महि नशे असंगल भारे हैं ॥ २४ ॥ सरल सुभाव न कपट दंभ उर दम्पति रँग में रंगे हैं ॥ सावधान बशुयाम नाम रत हर्षित रहहिं असंगे हैं ॥ चिंतहिं चरित चारु चिंतामणि विमल बचन मन अंगे हैं ॥ प्रेमलता तजि सोच रहहिं नित सन्त सनेही चंगे

हैं ॥ २५ ॥ सपनेउँ सीताराम नाम तजि चित्त न अन्त
कुलाते हैं ॥ लौकिक बैदिक विविध मनोरथ बाद
बिवाद न भंरते हैं ॥ ब्यभिचारिनि करसंग निरादरि
पति ब्रतधर्म कमाते हैं ॥ प्रेमलता धरिटेक एक उर
नाम निरंतर गाते हैं ॥ २६ ॥ मन उरझ्यो सियराम
रूप मधि रसना नाम सुगाते हैं ॥ संत सजाती संग
परम प्रिय चरित सुनत पुलकाते हैं ॥ अकड़े रहैं नाम
बल अनुछन कालहु ते न डराते हैं ॥ प्रेमलता बुध
बन्त संत सोइ राम रशिक कहलाते हैं ॥ २७ ॥ रस
बिनु होय न भक्ति भक्ति विनु भाव अनन्य सु दूरा है ॥
विनु अनन्य नहिं ईष्ट परापति ईष्ट बिना नर कूरा है ॥
गति चाहत अज्ञान रटे विनु राम नाम सुख सूरा है ॥
प्रेमलता गुरु देव कृपा विनु सब कृत कर्म अधूरा है
॥ २८ ॥ तजि कुलाज संकोच सोच सब भाव अनन्य
सुधारा है ॥ सद्गुरु कृपा प्रसाद पाय निज सहज स्वरूप
सभारा है ॥ विनु श्रम नशे मोह मद मत्सर कपट दंभ
छल मारा है ॥ प्रेमलता प्रगटे गुण माना दिव्य सुज्ञान
विचारा है ॥ २९ ॥ परम तत्वरसरास अनूपम पाय हु-
आ मस्ताना हैं ॥ अस्थिर भया चित्त चंचल मन दम्प

ति रूप लुभाना हैं ॥ नाना मतकी नशी बासना नाम निरंतर गाना हैं ॥ प्रेमलता गुरु देव कृपाते [illegible] अचल ठिकाना हैं ॥ ३० ॥ पावन पर्म सु देश जहाँ पर रशिक अनन्य सु रहते हैं ॥ सेवहिं रूप अनूप नाम रटि परमानन्द सु लहते हैं ॥ कहहिं सुनहिं प्रभु चरित परस्पर प्रमुदित अपर न चहते हैं ॥ प्रेमलता अनुभवहिं नवल सुख शोक कलंक न दहते हैं ॥ ३१ ॥ श्री सियराम विहार मनोरम गुणातीत सुखदाई है ॥ निरखि सुलोचन सफल करहिं निज जन्म लाभ भलपाई है ॥ भरे रहैं आवेश हमेशे प्रेम प्रीति अधिकाई है ॥ प्रेमलता परलोक लोक की शंका धोइ बहाई है ॥ ३२ ॥ जन अनन्य अद्भुत रस चाखत मुखते जात न गाया है ॥ बिसरि जाइ भव भान कहै को तन मन दशा भुलाया है ॥ जो रस अगणित योग यतन करि ब्रह्मादिक नहि पाया है ॥ प्रेमलता सोइ रस अनन्य उर आपहि आप समाया है ॥ ३३ ॥ दृढ़ अनन्य सिय राम रूप के मन बच कर्म सु सच्चे हैं ॥ नाम रूपगुण धाम ध्यानरत भजन भावरँग रच्चे हैं ॥ सपनेहू नहिं आन देव गति जेग प्रपंचते बच्चे हैं ॥ प्रेमलता सन्तन को [illegible]

अगम न जानहिं कच्चे हैं ॥३४॥ श्रीसियराम अनन्य भये बिनु जीव न भवनिधि तरते हैं ॥ चारि खानि जग लख चौरासी योनि जन्मि दुख भरते हैं ॥ जप तप योग उपाय करत बहु तदपि न कारज सरते हैं ॥ प्रेमलता सिय राम भजन बिनु सदा त्रिविधि ज्वर जरते हैं ॥ ३५ ॥ रटत २ सियराम नाम मुख गति अनन्य सर साती है ॥ उपज अनुभव ज्ञान विलक्षण आगम निगम जनाती है ॥ बरबश हरि भव मलिन बासना निज पर रूप लखाती है ॥ प्रेमलता उर फुरै रूपपर गति अनन्य जब आती है ॥ ३६ ॥ जन अनन्य के संग सदा सियराम धनुषधर रहते हैं ॥ सुर दुर्लभ सुख सुलभ सकल तेहि यदपि न सो कछु चहते हैं ॥ फक्क फकीरी फर्क फैल से नाम रटन दृढ़ गहते हैं ॥ प्रेमलता निर्दम्भ दिमानें बिचरहिं शोक न दहते हैं ॥ ३७ ॥ बिना रटे सियराम खूब नहिं मनकर संशय जाता है ॥ मन निर्मल बिनु भये जीव निज सहज स्वरूप न पाता है ॥ निज स्वरूप बिनु लखे ईश मन जीव न कबहूँ भाता है ॥ प्रेमलता जग ईश कृपा बिनु पुनि पुनि गोता खाता है ॥ रटै नाम तजि सकल भरोसा पहिरै

फकीरी बाना है॥ सिरपरटोप सु गलेगूदरी बिचरै होइ मस्ताना है॥ जाति कर्म कुल मान बड़ाई भाउ जगत पहिचाना है॥ प्रेमलता सो सन्त सनेही सियबर रूप समाना है॥३८॥ रसना रटै नाम निशि बासर है अनन्य धरि टेका है॥ तजै सकल व्योहार जहाँ लगि कर्म सुधर्म अनेका है॥ जगै विमल बैराग्य ज्ञान उर भक्ति बिचार बिबेका है॥ प्रेमलता सियराम रूपसँग होय सु एकमएका है॥३९॥ बिचरै मिथिला देश क्लेशहर रटै नाम सुख मूला है॥ श्री सियराम अनन्य होय दृढ़ सकल धर्म लखि तूला है॥ अनायास प्रभुरूप प्रगट उर ह्वै है लखि अनुकूला है॥ प्रेमलता यहि भाँति मनोरथ नशहिं त्रिविध भव शूला है॥४१॥ पढ़ै सुनैं जन गुणैं नेम करि यह अनन्य चालीशा है॥ श्री सियराम नाम रति पावन उपजै विश्वा बीशा है॥ अर्पि देउ सियराम नाम सकहँ तन मन वचन सु सीशा है॥ प्रेमलता दृढ़ धरि अनन्य गति रटै नाम जगदीशा है॥४२॥

॥दोहा॥

श्री मिथिला पर कोट ढिग, नगर धरेतवा नाम॥
बिरच्यो तहाँ अनन्य यह, चालीशा अभिराम॥१॥

पढ़ि सुनि गुनि शुचि संत जन, प्रेमलतहि वर देहु ॥
श्री सीताराम सु नामसन, बाढ़ै नवल सनेहु ॥ २॥

इति श्री सीताराम रामनाम रूप अनन्यता वर्णन
श्री १०८ परमहंस श्री सियालाल शरणजी
महाराज कृत समाप्त शुभम् ॥